

दुंदुभी बजाई आज देव गगन में।

गाती चलूं नाचूं कूदूं मैया आंगन में॥

सुना मैया को बाल भया है, सारे जग का अंधेरा गया है,

मचल रही खुशियां आज जड़ चेतन में॥

छबि बालक की दिलि को है भाई,

मानों रंको ने नव निधि है पाई,

जैसे नई ज्योति मिली अंध नयन में॥

नर नारी देते हैं वाधाई, मैया फूली न अंगों समाई,

होने लगी नाम ध्वनि जीव सबन में॥

चिर जीवे सह बालक तुम्हारा, होगा सारे विश्व का सहारा,

चारों मुक्ति भुक्ति लोटें इनके पगन में॥

पापी तापियों को पार लगावे, सत्य भक्ति की नौका चलावे,

कीर्ति फैलेगी इनकी तीनों भवन में॥

नाम होगा श्रीमैगसि उदारा, कोटि गंगा से पावन प्यारा,  
सबको दिखाएगा हरी दिल के दर्पन में॥